समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित
मूल्य : ₹ ४.५०

लोक कल्याण सेतु

● प्रकाशन दिनांक : १५ जुलाई २०२३ ● वर्ष : २७ ● अंक : १ (निरंतर अंक : ३१३) ● **भाषा : हिन्दी** ● पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी : ६ व ७ सितम्बर

पढ़ें पृष्ठ ३

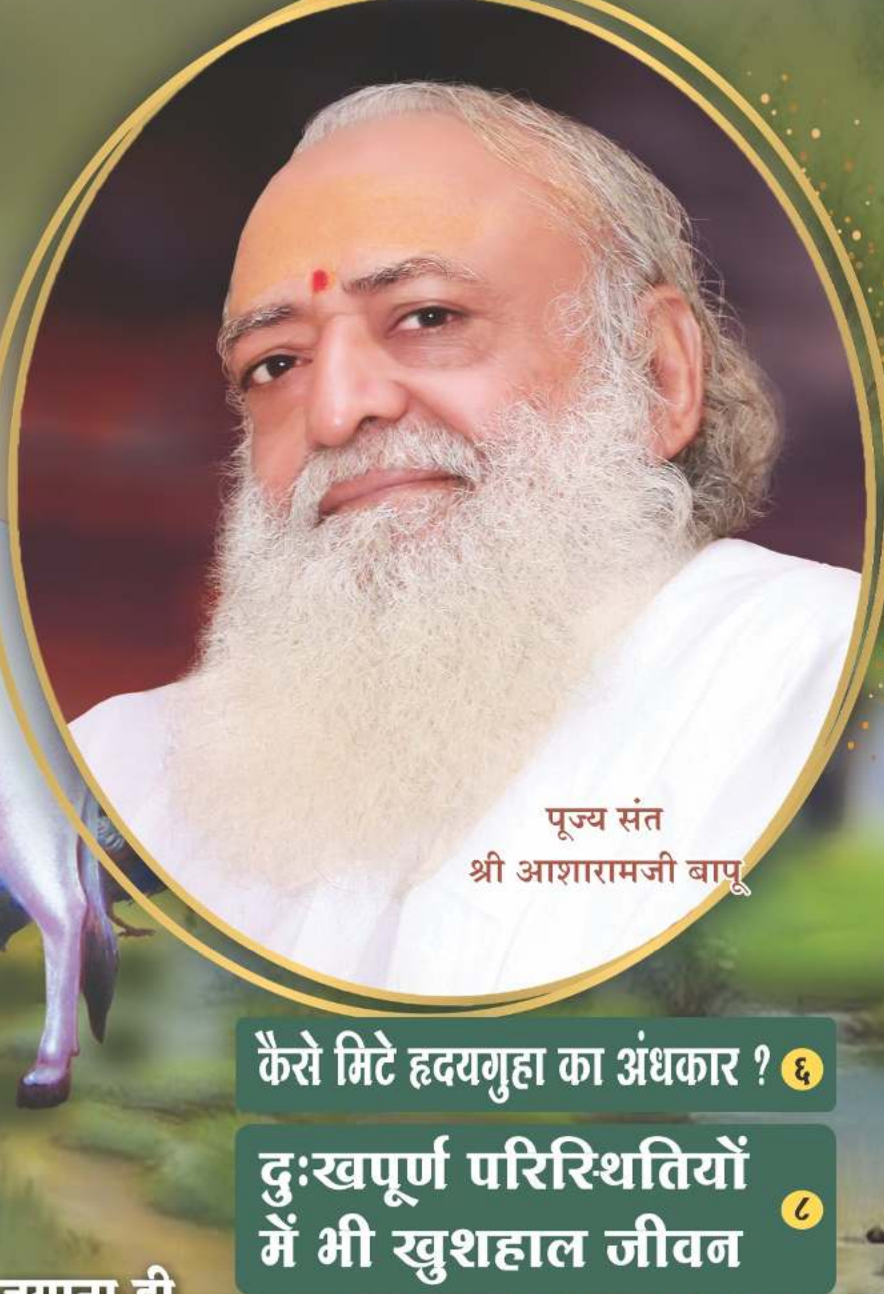

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

कैसे मिटे हृदयगुहा का अंधकार ? ६

दुःखपूर्ण परिस्थितियों में भी खुशहाल जीवन ८

जिन्होंने अमृतपान कराया, उनको ही विषपान कराया ९

मनुष्य को परमात्मा के 'सच्चिदानंद स्वभाव' में जगाना ही जन्माष्टमी और महापुरुषों का उद्देश्य होता है ।

जिन बापूजी ने लाखों लोगों के घरों में सुसंस्कारों की अलख जगायी, बच्चे-बच्चे को संयम का पाठ पढ़ाया, उनके साथ ऐसा अन्याय होना बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण है । - साध्वी माँ ध्यानमूर्तिजी, कथा-प्रवक्ता १७

गर्भवती महिला को सत्संग-श्रवण व शास्त्र-अध्ययन आवश्यक क्यों ? १२

बहुगुणकारी बेदाना के बीज १४

असम्भव को सम्भव कर दें ऐसी हैं
ये ३ अद्भुत शक्तियाँ

– पूज्य बापूजी

मनुष्य के जीवन में तीन अद्भुत शक्तियाँ हैं :

(१) श्रद्धा की शक्ति : श्रद्धा एक ऐसी अलौकिक शक्ति है जो जीवन को रसमय बना देती है। **श्रद्धा बिना धर्म नहिं होई।** (श्री रामचरित. उ.कां. : ८९.२) और

श्रद्धापूर्वाः सर्वधर्मा मनोरथफलप्रदाः । श्रद्धया साध्यते सर्वं श्रद्धया तुष्यते हरिः ॥

'श्रद्धापूर्वक आचरण में लाये हुए ही सब धर्म मनोवांछित फल देनेवाले होते हैं। श्रद्धा से सब कुछ सिद्ध होता है और श्रद्धा से ही भगवान संतुष्ट होते हैं।' (नारद पुराण, पूर्व भाग : ४.१)

श्रद्धा ऐसा रसायन है जो काम, क्रोध, लोभ, निराशा को भगा देता है। श्रद्धा जिनके प्रति है उन भगवान को, सद्गुरु को या बड़ बादशाह को क्या मिलता होगा लेकिन श्रद्धा जिसके हृदय में है उसको रसीला बना देती है, अहंकारशून्य बना देती है, चिंतारहित बना देती है और भगवत्प्रेम से पावन करने के राजमार्ग में श्रद्धा महारानी उसके अंतःकरण को पकड़-पकड़ के सत्संग के लिए बिठा देती है यह श्रद्धादेवी की ताकत है।

(२) विश्वास की शक्ति : बिना विश्वास के कोई सिद्धि नहीं पाता। विश्वास के बिना सफलता नहीं और श्रद्धा के बिना धर्म-रस नहीं।

मनुष्यैः क्रियते यत्तु तन्न शक्यं सुरासुरैः । (ब्रह्म पुराण : २७.७०)

जो मनुष्य कर सकता है वह सुर माने देवता भी नहीं कर सकते हैं और असुर, दैत्य, दानव भी नहीं कर सकते हैं ! हे मनुष्य ! तुझमें वह ताकत है कि तू भगवान को अपना मित्र बना सकता है, स्वामी या सेवक बना सकता है। यहाँ तक कि भगवान को बुला भी सकता है और अंतर्धान भी कर सकता है। यह श्रद्धा और विश्वास में ताकत है।

(३) प्रेम की शक्ति : प्रेम वह रसायन है कि जिसमें देश-काल की दूरी नहीं, वस्तुओं की गुलामी नहीं और नित्य नवीन रस देने की ताकत है। काम में शक्तिहीनता, पराधीनता और जड़ता है तथा प्रेम में स्वाधीनता, शक्ति-संवर्धनता और चेतनता है।

श्रद्धा, विश्वास और प्रेम - ये तीन अद्भुत शक्तियाँ तुम्हारे अंदर हैं, इनको बढ़ाओ। असम्भव को सम्भव कर दें, मिटनेवाले शरीर में अमिट आत्मा का साक्षात्कार करा दें, ये तीन शक्तियाँ ऐसी हैं। इनसे आत्मशक्ति, भगवदीय शक्ति और भगवत्शरणागति की शक्ति का अद्भुत सामर्थ्य प्रकट हो जाता है।

श्रद्धा, विश्वास व प्रेम की शक्ति

लोक कल्याण सेतु

मासिक प्रकाशन

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : २७ अंक : १ (निरंतर अंक : ३१३)
प्रकाशन दिनांक : १५ जुलाई २०२३ मूल्य : ₹ ४.५०
पृष्ठ संख्या : २६ (आवरण पृष्ठ सहित) भाषा : हिन्दी

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक :
राकेशसिंह आर. चंदेल
प्रकाशन-स्थल :
संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण-स्थल :
हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर, (हि.प्र.) -१७३०२५.
सम्पादक : रणवीर सिंह चौधरी

सम्पर्क पता :
'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)
फोन : (०७९) ३९८७७७३९/८८, २७५०५०१०/११.

* Email: lokkalyansetu@ashram.org,
* ashramindia@ashram.org
* Website: www.lokkalyansetu.org
www.ashram.org

लोक कल्याण सेतु' रुद्राक्ष मनका योजना

पूज्य बापूजी के करकमलों से स्पर्शित रुद्राक्ष मनका या जप-माला प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर !...सभी साधक एवं सेवाधारी 'लोक कल्याण सेतु' की इस योजना का लाभ ले सकते हैं।

सदस्यता शुल्क :

भारत में :		विदेशों में :	
(१) वार्षिक :	₹ ४५	(१) पंचवार्षिक :	US $५०
(२) द्विवार्षिक :	₹ ८०	(२) आजीवन :	US $१२५
(३) पंचवार्षिक :	₹ १९५		
(४) आजीवन :	₹ ४७५		

ॐ ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ ॐ

- श्रीकृष्ण का अवतार-उत्सव मनाने का उद्देश्य.........४
- संतसेवक के भी सेवक बन जाते हैं भगवान !...........७
- कैसे मिटे हृदयगुहा का अंधकार ?...................... ८
- सत्संग तो सभीको अवश्य करना चाहिए !............१०
- दुःखपूर्ण परिस्थितियों में भी खुशहाल जीवन........११
- जिन्होंने अमृतपान कराया, उनको ही विषपान कराया............................१२
- तो संतों के ये आठ गुण स्वाभाविक आ जाते हैं.......१४
- गर्भवती महिला को सत्संग-श्रवण व शास्त्र-अध्ययन आवश्यक क्यों ?......... १६
- गजब की है नूरानी दृष्टि, कर जाती कृपा की वृष्टि – डॉ. विमला मिश्रा..........................१८
- दुर्जनों की बात सत्य नहीं माननी चाहिए – संत तुकारामजी...........................१८
- बहुगुणकारी बेदाना के बीज...........................१९
- ऐसों की चरणरज से बढ़ता है स्वर्ग का पुण्य भी...... २२
- यह बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण है – साध्वी माँ ध्यानमूर्तिजी...२३
- पूज्य बापूजी के साथ आध्यात्मिक प्रश्नोत्तरी........ २४

✲ 'अनादि' चैनल टाटा स्काई/प्ले (चैनल नं. ११७०) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न केबलों पर उपलब्ध है।
✲ 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है।

✲ विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग ✲

अनादि TV — रोज सुबह ६:३० व रात्रि ११ बजे

DIGIANA DIVYA JYOTI — रोज रात्रि १०-०० बजे

Asharamji Bapu

सेवाकार्य भी
Asharamji Ashram

Mangalmay Digital

आश्रम के आधिकारिक यूट्यूब चैनल्स

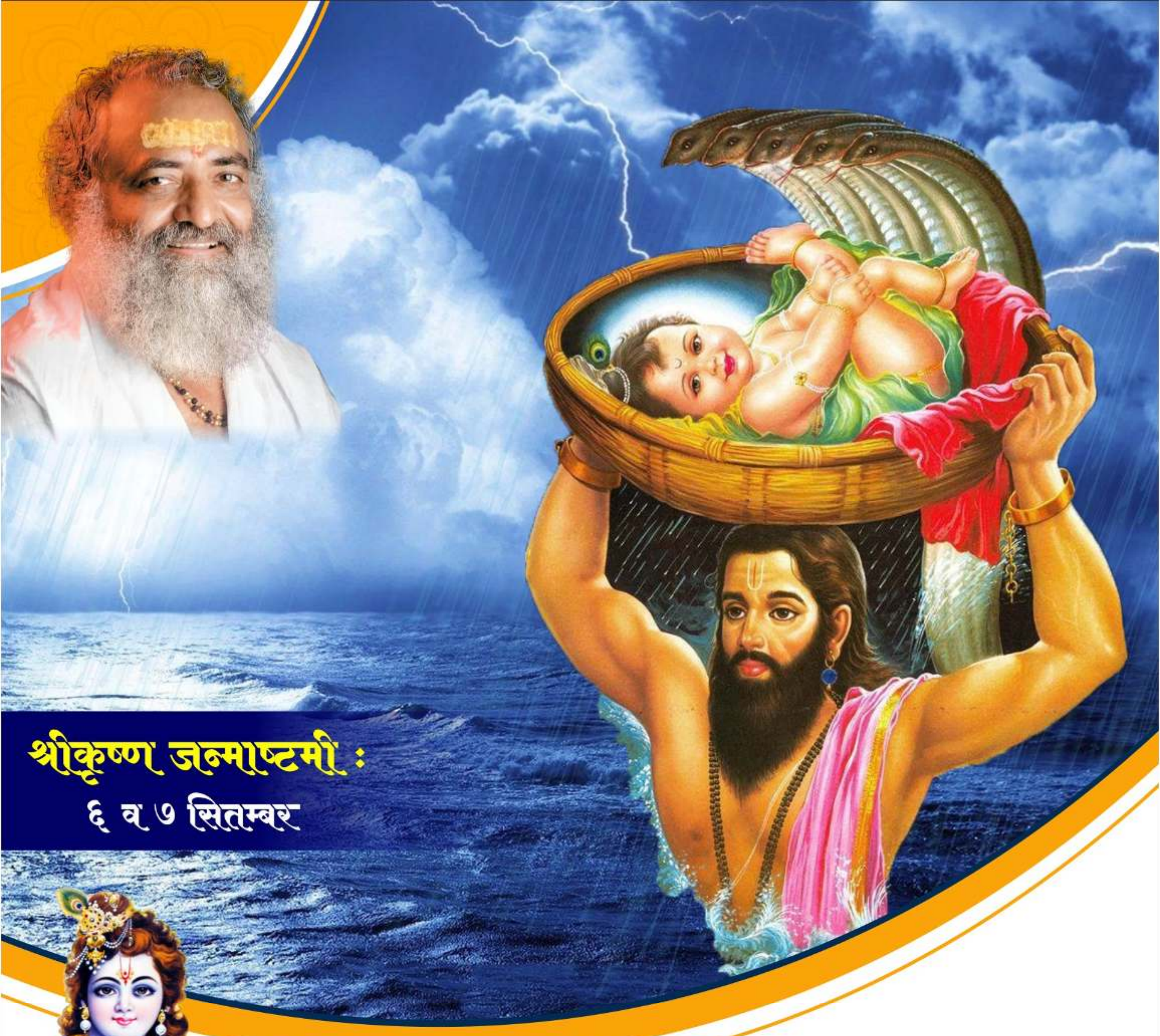

श्रीकृष्ण का अवतार-उत्सव मनाने का उद्देश्य

- पूज्य बापूजी

श्रीकृष्ण का अवतार-उत्सव मनाने से अभिप्राय है श्रीकृष्ण का आदर्श, श्रीकृष्ण का संकेत जीवन में लाना। हमने 'कृष्ण-कन्हैया लाल की जय !' कह दिया, मक्खन-मिश्री बाँट दी - खा ली, इतने से ही अवतार-उत्सव मनाने की पूर्णता नहीं होती।

भगवान श्रीकृष्ण का उद्देश्य था तुम्हारे भीतर छुपे हुए कृष्ण-तत्त्व का, आनंद, माधुर्य, शक्ति और सत्यस्वरूप का दीदार कराना । मैंने चाँद दिखाने के लिए हाथ उठाया, अंगुली-निर्देश किया। मेरा उद्देश्य है आप चाँद देखो और आपने हाथ का ही फोटो ले लिया, उँगली को ही पकड़ के बैठ गये तो मेरा उद्देश्य मारा जायेगा । ऐसे ही श्रीकृष्ण का उद्देश्य था कि आप अपनी महिमा में जगो, अपने

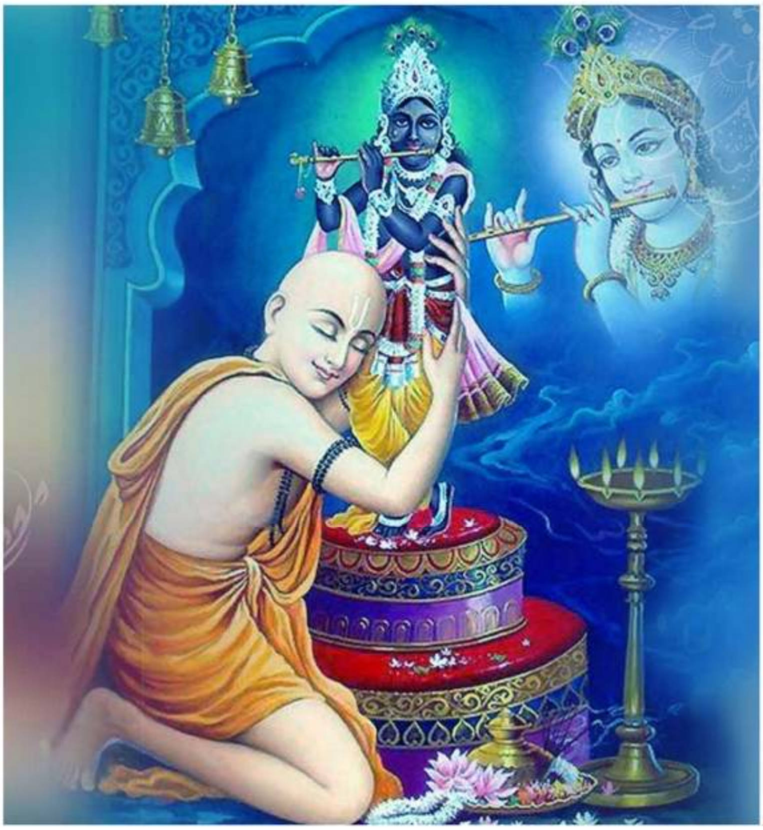

संतसेवक के भी सेवक बन जाते हैं

भगवान !

नापाजी नामक एक संतसेवी भक्त थे । वे नित्यप्रति संतों-भक्तों की सेवा करते थे । पर समाज में पूर्वकाल से ही कुछ ऐसे स्वभाव के लोग होते आये हैं जिन्हें संतों-भक्तों व उनके सेवाकार्यों से ईर्ष्या होती है । भक्त नापा के ग्राम में ऐसा ही एक ग्रामपति था । उसने नापाजी की संत-सेवा देख के उनसे कर (टैक्स) के रूप में विशाल धनराशि माँगी । उतना धन न दे सकने के कारण भक्त को दो दिन तक नजरबंद रखा गया । इसी बीच पहले दिन कुछ संत नापाजी के यहाँ पधारे । उनकी भक्तिमती पत्नी ने नापाजी के पास इसकी जानकारी दी तो उन्होंने कहा : ''घर के बर्तनों को बेचकर संत-सेवा करो ।'' पत्नी ने वैसा ही किया ।

संतजन अभी प्रसाद पाकर गये ही थे कि नापाजी की ससुराल के कुछ व्यक्ति आ गये । अब तो उनकी पत्नी को बड़ी चिंता हुई क्योंकि न तो घर में बर्तन ही थे और न ही खाद्य सामग्री थी । अब भगवान से रहा नहीं गया । वे नापाजी का वेश बना के आये और घर में बर्तनों के साथ-साथ बहुत-सा अनाज रखकर अंतर्धान हो गये । नापाजी की पत्नी ने अपने संबंधियों का खूब आदर-सत्कार किया । दूसरे दिन जब भक्त नापा लौटे तो पत्नी से अनाज की राशि एवं बर्तनों के बारे में पूछा । पत्नी ने कहा : ''आप ही तो कल दे गये थे !'' सुनते ही नापाजी समझ गये कि यह परम दयालु भगवान की ही लीला थी ।

नापाजी दिनभर तो संतों की सेवा करते और रात्रि के समय अपने खेत में पानी देने जाते थे । रात में अँधेरा होने के कारण पानी खेत में न जाकर बाहर निकल जाता और उनको मालूम भी न पड़ता । भक्त की इस समस्या को देखकर भगवान स्वयं रात के समय नापाजी के पुत्र के वेश में आ के खेत सींचने लगे । नापाजी ने जब यह देखा तो उन्होंने अपने पुत्र को रात में खेत पर जाने से मना कर दिया । किंतु इसके बावजूद खेतों में पानी दिया हुआ देख नापाजी को बड़ा आश्चर्य हुआ !

एक रात को वे उठे और अपने पुत्र के कमरे में जाकर देखा तो वह वहाँ सो रहा था । फिर नापाजी खेत पर गये, जहाँ उन्होंने पुत्र को सिंचाई करते हुए देखा । भक्तराज को भगवान की लीला समझने में

तो संतों के ये 8 गुण स्वाभाविक आ जाते हैं

– पूज्य बापूजी

भगवान उद्धवजी से कहते हैं :

सन्तोऽनपेक्षा मच्चित्ताः प्रशान्ताः समदर्शिनः ।
निर्ममा निरहङ्कारा निर्द्वन्द्वा निष्परिग्रहाः ॥

'संत पुरुषों का लक्षण यह है कि उन्हें कभी किसी वस्तु की अपेक्षा नहीं होती । उनका चित्त मुझमें लगा रहता है । उनके हृदय में शांति का अगाध समुद्र लहराता रहता है । वे सदा-सर्वदा, सर्वत्र, सबमें सब रूप से स्थित भगवान का ही दर्शन करते हैं । उनमें अहंकार का लेश भी नहीं होता फिर ममता की तो सम्भावना ही कहाँ है ! वे सर्दी-गर्मी, सुख-दुःख आदि द्वन्द्वों में एकरस रहते हैं तथा निष्परिग्रही* होते हैं ।'

(श्रीमद्भागवत : ११.२६.२७)

जिनके जन्मों का और नासमझी (अज्ञान) का अंत हो जाता है उन्हें संत कहते हैं । संत अनपेक्ष, परमात्मा में चित्त लगाये रखनेवाले और प्रशांत होते हैं, उनमें समदर्शिता होती है, निर्ममता उनका स्वभाव होता है, निरहंकारिता, निर्द्वन्द्वता और निष्परिग्रह – इन ८ गुणों से युक्त होते हैं संत ।

सुख के बिना हम जी नहीं सकते हैं । सुख की

बहुगुणकारी बेदाना के बीज

पित्त-संबंधी समस्याओं में विशेष लाभकारी

शीतलता-प्रदायक प्रयोग

शरद ऋतु (२३ अगस्त से २३ अक्टूबर) में पित्त प्रकुपित होता है अतः इस ऋतु में बेदाना (बिहीदाना) के बीज बहुत ही गुणकारी औषधि हैं।

शरद ऋतु (२३ अगस्त से २३ अक्टूबर) में पित्त प्रकुपित होता है अतः इस ऋतु में बेदाना (बिहीदाना) के बीज बहुत ही गुणकारी औषधि हैं। आयुर्वेद के अनुसार ये वात-पित्तशामक, कफ-निस्सारक, बलवर्धक, हृदय व मस्तिष्क के लिए हितकारी व शरीर को पुष्ट करनेवाले हैं। ठंडी प्रकृति के होने से ये रक्तपित्त (शरीर के किसी भी भाग से खून आना) में लाभदायी हैं। क्षयरोग (T.B.) में बलगम के साथ रक्त आता हो तो बेदाना के बीजों का उपयोग खूब लाभदायी है।

ये मुँह के छाले, प्यास की अधिकता, गला सूखना, आँतों का रूखापन, खूनी बवासीर, खूनी दस्त, आमाशय व्रण (peptic ulcer), आँतों के घाव, सूखी खाँसी, शरीर की जलन, स्वप्नदोष व महिलाओं की अधिक मासिक स्राव एवं सफेद पानी पड़ने की बीमारी (श्वेतप्रदर) आदि में हितकारी हैं। विशेषतः पेशाब में जलन, संक्रमण, मवाद आना, पेशाब के साथ खून आना आदि मूत्र-संबंधी समस्याओं में लाभदायी हैं।

शीतलता-प्रदायक प्रयोग

बेदाना के २-५ ग्राम बीज १०० मि.ली. पानी में रातभर भिगोकर रखें, सुबह मसल-छान के लें

ऐसों की चरणरज से बढ़ता है

स्वर्ग का पुण्य भी

– पूज्य बापूजी

मैंने सुनी है एक कथा :

कुछ लोग स्वर्ग के द्वार पर कतार में खड़े थे और द्वार खटखटाये जा रहे थे। थोड़ी देर में एक देवदूत ने द्वार से झाँका और पूछा : ''क्या बात है ? कहाँ से आये हो ?''

बोले : ''पृथ्वी से आये हैं।''

''कौन-सी पृथ्वी से ? किस इलाके से आये हो और तुमने कौन-सा अच्छा काम किया है ?''

एक व्यक्ति आगे आया और बोला : ''मैं गाँव का मुखिया था, सरपंच था।''

देवदूत : ''अच्छा... मुखिया था तो सेवा-भक्ति के द्वारा लोगों को भगवान की तरफ मोड़ा कि अपना अहं सजाने के लिए मुखिया बना था यह जरा जाँचना पड़ेगा।''

दूसरे व्यक्ति से पूछा तो वह बोला : ''मैं राजा था।''

देवदूत : ''तुमने राज्य किया तो भोग-विलास करके, ऐश-आराम करके नारकीय योनियों में जाने का कार्य किया था या लोगों के आँसू पोंछकर लोकेश्वर को पाने का कार्य किया था ? किसी संतपुरुष के द्वार पर गये थे ?''

भूतपूर्व राजा : ''नहीं, किसी संत के द्वार पर तो नहीं गया था।''

देवदूत : ''जरा खिसको।''

फिर तीसरे व्यक्ति से पूछा तो उसने कहा : ''मैंने अपनी सारी सम्पत्ति दान कर दी है। मेरे तीन कारखाने थे, उन्हें तीनों लड़कों को दान कर दिया। जो फिक्स्ड डिपॉजिट थी उसे जमाइयों को दान कर दिया और आभूषण पत्नी को दान कर दिये।''

देवदूत : ''यह सब इकट्ठा करने में जो पाप हुए वे ?''

''उसका तो मुझे पता नहीं।''

''चल दूर हट ! मोह-ममता से पैदा किये बच्चों को, परिवार को सम्पत्ति देना क्या दान माना जाता है ? मूर्ख कहीं का !''

फिर एक महिला आगे आयी और बोली : ''मैं खूब व्रत करती थी।''

देवदूत : ''अच्छा ! व्रत के दिन ध्यान, जप करती थी ?''

जीवन के सुलगते सवालों व ढेरों समस्याओं के मूल कारण का निवारण

आश्रम का इष्टग्रंथ श्री योगवासिष्ठ महारामायण (भाग १ से ४)

सहज में दुःख दूर करके परमात्मा के दिव्य आनंद से जीवन को सराबोर करनेवाला अद्भुत सद्ग्रंथ ।
इससे जानिये - क्या है सृष्टि का मूल और कैसे हुई जगत की उत्पत्ति ? आत्मसाक्षात्कार करने का सबसे सरल उपाय ।

चारों भागों का मूल्य : ₹ ७२५
(डाक खर्च बिल्कुल मुफ्त !)

पूरे परिवार के उत्तम स्वास्थ्य के लिए

आँवला कैंडी

सेहत और स्वाद का संगम

मीठी व नमकीन दोनों उपलब्ध

₹ १४० ५०० ग्राम

पुष्कर आश्रम गौशाला से जुड़ी जंगल की शुद्ध भूमि, जो गोधूलि, गौ-खाद, अन्य शुद्ध खाद, अत्यंत शुद्ध जल से सम्पन्न है, उसमें उपजे ताजे आँवलों से तैयार की गयी यह कैंडी स्वास्थ्य एवं साधना में सहायक है । यह स्वादिष्ट, शक्तिप्रद एवं विटामिन 'सी' से भरपूर है । बच्चों को बाजारू टॉफियों से बचाने हेतु यह स्वास्थ्यवर्धक उत्तम विकल्प है ।

₹ ३० ५० ग्राम

रसायन टेबलेट

ये गोलियाँ शक्ति, स्फूर्ति, ताजगी तथा दीर्घ जीवन देनेवाली हैं । जीर्णज्वर, वीर्यदोष, मूत्रसंबंधी रोग, स्वप्नदोष आदि में लाभदायी हैं । ये बढ़ती उम्र के साथ आनेवाली कमजोरी एवं रोगों से रक्षा करती हैं । रोगी-निरोगी सभी इन्हें ले सकते हैं । निरोगता व दीर्घ आयुष्य हेतु ४० वर्ष की उम्र के बाद इनका सेवन विशेषरूप से करना चाहिए ।

शहदयुक्त त्रिफला टेबलेट

₹ ५० १०० ग्राम

ये गोलियाँ श्रेष्ठ रसायन, बलप्रद एवं पौष्टिक हैं । ये नेत्रों के लिए हितकर, वर्ण एवं स्वर को उत्तम करनेवाली, वीर्यवर्धक, भूख बढ़ानेवाली व रुचिकारक हैं । इनके नियमित सेवन से मस्तिष्क-रोग, दंतरोग, हृदयरोग एवं गुर्दों (kidneys) की विभिन्न बीमारियों से रक्षा होती है । ये चर्मरोग, मोटापा, दमा, खाँसी, कब्ज, पेट का फूलना, अजीर्ण आदि में भी लाभदायी हैं ।

आँवला भृंगराज केश तेल

यह बालों का झड़ना, असमय सफेद होना, रूसी, सिरदर्द, मस्तिष्क की कमजोरी आदि समस्याओं को दूर करता है । बालों की जड़ों को मजबूत करता है व उनको बढ़ाकर उनमें चमक लाता है । दिमाग को ठंडा रखता है व स्मरणशक्ति को बढ़ाता है ।

१०० मि.ली. - ₹ ५०
२०० मि.ली. - ₹ ९५
५०० मि.ली. - ₹ २२५

अच्युताय मलहम

यह दाद, खाज, खुजली आदि चमड़ी के रोगों तथा फंगल व बैक्टीरियल इन्फेक्शन में लाभकारी है, साथ ही पैरों की कटी-फटी एड़ियों के लिए बहुत उपयोगी है ।

₹ ३० ४० ग्राम

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७६९. ई-मेल : contact@ashramestore.com

सारस्वत्य मंत्र अनुष्ठान एवं विद्यार्थी शिविरों द्वारा समुन्नत हो रही भावी पीढ़ी

RNI No. 66693/97
RNP No.GAMC-1253-A/2021-2023
Issued by SSPO's-AHD
Valid upto 31-12-2023
WPP No. 02/21-23
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2023)
Posting at Dehradun G.P.O. between 18th to 25th of every month.
Publishing on 15th of every month

योग व उच्च शिक्षा संस्कार कार्यक्रमों में सर्वांगीण विकास की कुंजियाँ पाते विद्यार्थी

तृप्तिदायी शरबत पिलाकर आत्मतृप्ति पाते बापू के प्यारे

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन लोक कल्याण सेतु, ऋषि प्रसाद व ऋषि दर्शन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : Lok Kalyan Setu Rishi Prasad Rishi Darshan

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक और मुद्रक :** राकेशसिंह आर. चंदेल **प्रकाशन-स्थल :** संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल :** हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक :** रणवीर सिंह चौधरी